

स्वतंत्रता संग्राम में “ सैलाना ”

डॉ. मंशाराम उइके

सहायक प्रध्यापक इतिहास
शासकीय स्वशासी स्नातोत्तर
महाविद्यालय छिंदवाडा

Gmail – mansharamu@gmail.com

सै

लाना रियासत मध्यभारत में मालवा क्षेत्र की एक छोटी किन्तु प्रथम- श्रेणी की रियासत थी यह समुद्रतल से लगभग 1900 फीट की ऊँचाई पर मालवा के पठार पर बसी हुई है। यह रियासत रतलाम-रियासत की सीमाओं से चारों ओर घिरी हुई होकर रतलाम राज्य के मूल संस्थापक राजा रतनसिंह राठौर के राज्य का ही एक भाग है। इसके शासक भी रतनसिंह के वंशज राठौर रतनौत राजपूत हैं। इस रियासत का क्षेत्रफल लगभग 450 वर्ग मील हैं।

राजा मानसिंह ने अपने छोटे भाई जयसिंह को अपने राज्य का एक भाग सैलाना, जागीर के रूप में दे दिया कालांतर में यही जागीर सैलाना राज्य के रूप में विख्यात हुई। यही कारण है कि रतलाम और सैलाना रियासतों की सीमाएं आपस में मिली-जली होकर इनमें सदैव आपस में उलझाव बना रहा।

यह भी एक सुखद संयोग है कि सन् 1948 में रियासतों के विलीनीकरण के समय मध्य भारत में मिलकर सैलाना पुनः रतलाम जिले में मिल गया। इस प्रकार दोनों रियासतें फिर से एक हो गई।

सैलाना गाँव रतलाम-शहर से 14 मील उत्तर में बसा हुआ है, जो कि रतलाम राज्य की एक तहसील धामनोद से सिर्फ 3 मील दूर है कहा जाता है कि पहाड़ी के मुख पर बसा होने के शैल-शैल पहाड़ तथा अलाना मुहं सैल अलाना सैलाना इसका नाम पड़ा यहां हिन्दु, मुलसमान, जैन, हरिजन, और आदिवासी जातियां मुख्यतया निवास करती है। सैलाना गांव के किनारे से ही मलहर्णी या मलोनी नामक नदी निकलती है जो आगे जाकर रतलाम राज्य की सीमा में से होकर चम्बल में मिल जाती है।

राजनैतिक-जागृति:-

सैलाना रियासत में राजनैतिक चेतना का सन् 1928 के पूर्व तक सर्वथा अभाव था। सन् 1928-29 में यहाँ के कुछ पढ़े लिखे लोगों में कुछ वैचारिक क्रांति जागी कहा जाता है कि रावटी में श्री कन्हैयालाल व्यास रहते थे जो स्वामी ज्ञानानन्दजी के प्रभाव से रतलाम में कुछ काम किया करते थे। उनके सम्पर्क में सैलाना के कुछ शिक्षित और क्रांति प्रेमी नवयुवक आते रहते थे। उनके कारण सैलाना में क्रांति की कुछ हवा फैली। रावटी के श्री बसन्तीलाल व सैलाना के श्री गिरधारी लाल पंवार श्री चुन्नीलाल मिस्त्री, श्री वर्माजी रेल्वे गार्ड, श्री जगदीशचन्द्र तथा श्री बद्रीप्रसाद जोशी आदि युवक आपस में मिलते जुलते, कभी-कभी सभा आदि करके खादी आदि की बातें लोगों को समझाते या कभी जनता के किसी दुःख आदि को लेकर मीटिंग आदि करते अथवा राजा को दरखास्त आदि देते, आदि कार्य करते थे। वे बैंगर-प्रथा रोकने व राज्य में शिक्षा, स्वास्थ्य की समुचित व्यवस्था करने अथवा म्युनिसिपल्टी आदि की स्थापना संबंधी चर्चाएं करते रहते थे। राज-दरबार को यह सब अप्रिय लगता था फलस्वरूप राजा इन लोगों को बुलाकर कभी कभार डॉट-फटकार देते अथवा कभी सुधार-संबंधी चर्चाएं करते थे। अधिकारी गण राजा के इशारे पर कभी-कभी इन सुधारवादियों को कोतवाली बुलाकर ले जाते व घण्टे दो घण्टे बाद इन्हें डरा धमकाकर अथवाय डॉट फटकार देकर छोड़ देते थे। सामान्य जनता का यह हाल था कि खादी पहनना तो दूर लोग सफेद टोपी तक से डरते थे रतलाम की हवा धामनोद गांव में स्वामी ज्ञानानन्दजी के आगमन व कुछ समय वहां निवास करने के फलस्वरूप उनका भाषण व प्रवचन सुनने यहां की जनता जाया आया करती थी। इससे अपरोक्ष वातावरण पहनना अपराध माना जाता था। गाँधी-तिलक या

अन्य क्रांति पुत्रों के नाम इने-गिने लोग जानते थे। सन् 1929 के आसपास तक कुछ राष्ट्रीय व क्रांतिकारी पत्र-पत्रिकाएं यहां के कुछ अध्यापकों व एक दो क्रांतिकारियों के माध्यम से आती और बिलती थी। श्री बद्रीप्रसाद जोशी इनमे से एक थे। कुछ युवक सर्व श्री बद्रीनाथ जोशी, बंसतीलाल शर्मा, चुन्नीलाल मिस्त्री, गिरधारी जी व कुछ विद्यार्थी यदाकदा किसी राष्ट्रीय पर्व गांव के बाहर जाकर तिरंगा लहराकर राष्ट्रीय —गीत विजयी विश्व तिरंगा----- व वन्दे मारतम् गाते थे। इन्हीं दिनों यहां एक साहित्यकार संस्था भी चलाई गई थी जिसे यहां के राजा गुपचुप सहायता भेज देते थे। इन दिनों सन् 1929 में यहां का एक उत्साही 17 वर्षीय युवक श्री गिरधारी पंवार अलीराजपुर या भाभरा अपने घर गया। यहां भारत के क्रांतिकारी शहीदे आजम चन्द्रशेखर आजाद सम्पर्क और सानिध्य में आया उनसे उसने विस्फोटक बनाने की कला भी सीख ली। वह सैलाना लौट आया। उसने अपने साथी श्री बसन्तीलाल व श्री जगन्नाथ वर्मा को साथ लेकर बारूदी सामग्री एकत्र कर केदारेश्वर के पास दो छोटे-छोटे बम बनाये। एक का (बतोर ट्रायल के) वहीं फेंका। दीवान तो बच गया, क्योंकि वह उस समय कमरे में नहीं था, परंतु खिड़की दरवाजे आदि बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हुए। श्री गिरधारी पंवार व श्री जगन्नाथ वर्मा पकड़े गये। इन पर मुकदमा चला। श्री जगन्नाथ को छोड़ दिया गया पर श्री गिरधारी पंवार को राज्य द्रोह, विस्फोटक रखने बनाने और विस्फोट करने के जुर्म में एक साल के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया। एक साल तक यह व्यक्ति जेल में बंद रहा और इधर, सैलाना पूर्णतया शांत रहा।

मुकदमे के कोई कागजात आदि उपलब्ध नहीं है स्व. श्री हेमराजमल व श्री गिरधारी पंवार व अन्य साथियों के कथन ही इसका आधार है इन्हीं दिनों श्री बद्रीप्रसाद जोशी ने अपने पैतृक धंधे हलवाई की दुकान के साथ-साथ एक छोटा सा खादी भण्डार भी खोला। एक तो छोटा सा गांव जिस पर खादी की दुकान, राजा कैसे बर्दाशत करता। उसने लोगों को डराया-धमकाया। खादी भण्डार से खादी और राष्ट्रीय साहित्य थोडा बहुत बिकता, परंतु बहुत अधिक लोग देखने आते।

इन्हीं दिनों सन् 1931 में रतलाम राज्य की विदेशी वस्त्र बहिष्कार मण्डल की 20 देश दिवानों की एक टोली डॉ. प्राणशंकर दवे के नेतृत्व में जिसमें सर्व श्री लेहरसिंह भाटी, रतनलाल पोरवाल, लक्ष्मीनारायण व्यास, सौभाग्यमल पोरवाल, मोतीलाल सोनी, दलीचन्द्र जैन, चीमनलाल पटेल

और शीवलाल वीर आदि विदेशी वस्त्र बहिष्कार व खादी प्रचार करने हेतु आयी। यह टोली रतलाम से पैदल ही आयी थी। यह एक नोहरे में ठहरी। गांव मे घुसले ही महात्मागांधी की जय, भारत माता की जय, खादी पहिनो-स्वेदशी अपनाओं के नारे लगाते तथा खुब लडी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी के गीत गाते हुऐ गाव मे धुमे और स्थान स्थान पर विदेशी वस्त्रो की होली जलाई। सैलाना की जनता के लिये सचमुच यहां एक अजीब आकर्षण व तमाशा था। पुलिस अधिकारी हैरान थे गांव के हजारो नर-नारी बाल-वृद्ध सड़को पर उतर आये यहां के कुछ कार्यकर्ता भी इस टोली मे शरीक हो गये स्थानीय एक हलवाई महिला श्रीमति मानीबाई तथा उसके पुत्र या पौत्र जिसका नाम ज्ञात नहीं ने इस टोली की काफी सहायता की। राजा दिलीपसिंह ने डॉ.दवे को बुला भेजा सभी लोग गये राजमहल के नीचे राष्ट्रीय गीत गाते और राष्ट्रीय नारे लगाते रहे राजा ने डॉ. दवे के कार्य की सराहना की व उन्हें रचनात्मक कार्य करने हेतु उत्साहित किया उन्होंने अपने यहां की पुलिस और अधिकारियों को कोई भी कार्यवाही नहीं करने दी। राजा ने डॉ. दवे के द्वारा सभी कार्यकर्ताओं को शान्ति पूर्ण आंदोलन करने के फलस्वरूप आभार माना व एक छोटी सी रकम देकर सहयोग प्रदर्शित किया। डॉ. दवे के लौटते ही लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई क्योंकि यहां के लोगों में यह भय व्याप्त था कि इन क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी होगी परंतु ऐसा न होकर उल्टे आर्शीवाद प्राप्त हुआ। सांयकाल एक भव्य सफल जनता सभा आयोजित की गई। यहां पर इन कार्यकर्ताओं ने 3-4 कपडे के व्यपारियों से विदेशी वस्त्र न बेचने का समझौता किया। रामभर सैलाना मे रहकर लोगों मे राष्ट्रीयता का वातावरण निर्मित करके प्रातकाल यह दल रतलाम लौट गया। इसी दिन मुलसमानों का ताजिए का त्यौहार था श्री जीवाभाई बोहरे ने इस कार्यक्रम में काफी रस लिया था।

संदर्भ ग्रंथ —

1. पत्रिका का प्रकाशक —रतलाम जिला स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ।
2. सिंह डॉ. रघुवीर, रतलाम का प्रथम राज्य उसकी स्थापना एवं राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1950।
3. नागोरी एस.एल. एवं नागोरी कांता, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान — सुरभि पब्लिकेशन जयपुर 1997।

4. हांडा राजेन्द्रलाल, देशी रियासतो में स्वाधीनता संग्राम का इतिहास — स्टलिन पब्लिकेशन प्रा. ली. मोरी गेट दिल्ली 1969 ।
5. जैन पुखराज भारत का राष्ट्रीय आंदोलन तथा संवैधानिक विकास सरस्वती सदन जवाहर नगर दिल्ली 1972 ।
6. गुप्त श्री विश्व प्रकाशन व गुप्त मोहिनी स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएं — नमन प्रकाशन नई दिल्ली 2002 ।

